रीढ़ धारियों की नक्शानवीसी

वन्य जीव संरक्षण के क्षेत्र में वैज्ञानिकों ने हाल ही एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। पिछले करीब एक दशक से शोधकर्ताओं की टीमें दुनियाभर में फैले रीढ़धारियों के बारे में जानकारी जुटाने में लगी थीं कि कौन से जीव किन इलाकों में रहते हैं या कहां-कहां उनके पाये जाने की संभावना है। रीढ़धारियों की मुख्यतः चार श्रेणियां मानी जाती हैं- स्तनधारी, पक्षी, उभयचर जीव और रेंगने वाले जीव यानी सरीसृप। इनमें पहली तीन श्रेणियों को लेकर यह काम करीब-करीब पूरा हो चुका था। कमी थी तो सिर्फ रेप्टाइल्स यानी सरीसृप प्राणियों की। ताजा खबर यह है कि तेल अवीव यूनिवर्सिटी के प्रफेसर शई मीरी के नेतृत्व में अध्येताओं की टीम ने यह कठिन कार्य भी पूरा कर लिया है। इस कार्य की विशालता और दुरूहता का अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि दुनियाभर के कुल 39 वैज्ञानिकों को लेकर गठित ग्लोबल असेसमेंट ऑफ रेप्टाइल डिस्ट्रिब्यूशन (गार्ड) ग्रुप्स ने छिपकली, सांप, कछुआ और मगरमच्छ जैसे तमाम जंतुओं की 10,064 प्रजातियों के रहने के ठिकानों का पता लगाया। 99 फीसदी सरीसृप प्रजातियां इस मैपिंग में कवर हो गईं। इससे वन्य जंतुओं की नक्शानवीसी का वह ऐतिहासिक कार्य पूर्ण मान लिया गया जिसके डेटाबेस में करीब 10,000 पक्षी, 6000 उभयचर प्रजातियां और 5000 स्तनधारी पहले से मौजूद हैं। यानी कहा जा सकता है कि कीड़े-मकोड़ों और गहरे समुद्र में रहने वाले जीवों को छोड़कर धरती पर मौजूद तमाम जीव-जातियों के बारे में निर्णायक महत्व की कुछ जानकारियां अब हमारे पास हैं। हमें पता है कि कौन-कौन सी प्रजातियां किस तरह के खतरे झेल रही हैं, किन्हें संरक्षित किए जाने की जरूरत है और किन प्रजातियों को कैसे इलाकों में बसाकर सुरक्षित रखा जा सकता है। मसलन छिपकलियों की बात करें तो सूखे और गर्म इलाके इनके लिए ज्यादा मुफीद पड़ते हैं, लिहाजा इन्हें संरक्षित करने के लिए रेगिस्तानी इलाके ज्यादा सही रहेंगे। लेकिन रेगिस्तानी इलाके आजकल तमाम टकरावों और हथियार परीक्षण के केंद्र भी बने हुए हैं। यानी यह मैप पृथ्वी को जीव मात्र के लिए ज्यादा सुरक्षित बनाने में तभी सहायक हो सकता है, जब दुनिया पर अपना दबदबा कायम करने की जिद पूरी करने में जुटी शक्तियां मानवीय विवेक का अंकुश मानने को तैयार हों।

छलिया विकास तुम कहां हो

गुजरात में कहा गया कि विकास बावलो थायो छे भाई! इतना सुनने भर की देर थी कि हमारे युवराज ने भी कह डाला कि विकास पागल हो गया है। यह खबर अब हवा की तरह फैल रही है कि विकास पागल हो गया है। अब तो महाराष्ट्र के शेर भी कह रहे हैं कि विकास पागल हो गया है। उधर, विकास के रहनुमा कह रहे हैं कि विकास तो रोल मॉडल है, उसे चंदू काका के चश्मे से देखा जाना चाहिए। अब जबकि उन्होंने कहा है तो हमें चंदू काका और उनके चश्मे को भी खोजना होगा, तभी तो हम विकास को उसके सही रूप में देख और पहचान पायेंगे! लेकिन प्रश्न यह भी है कि विकास है कौन! मैंने हरेक जगह जानने-पहचानने की कोशिश की कि यह विकास है कौन? कहां रहता है, कैसा दिखाई देता है? जीवित प्राणी है! यदि देहवान है तो क्या शैशव अवस्था में है, यौवनावस्था में है अथवा जरावस्था में। किन्तु विकास है कि मिल ही नहीं रहा है। विकास नाम नया नहीं है क्योंकि जो भी आता है वह विकास नाम की रट ही तो लगाये रहता है। लेकिन विकास है कि वह किसी को तो विशाल रूप में दिखाई देता है तो किसी को सूक्ष्म रूप में भी नहीं दिखाई देता है। आखिर ऐसा क्यो? उसे तो समदृष्टा होना चाहिए।

बचपन में सिमटती खेल की जगह

घर के आसपास कई स्कूल हैं। जहां रहती हूं ,वहां भी बहुत से छोटे बच्चों से लेकर किशोर तक बड़ी संख्या में रहते हैं। सोसायटी में बड़ा पार्क भी है मगर इन दिनों बहुत कम बच्चे खेलते दिखाई देते हैं। दरअसल, बच्चों की दिनचर्या भी लगभग बड़ों जैसी बन चली है। वे सवेरे स्कूल जाते हैं, वहां से लौटने के बाद ट्यूशन या कोचिंग पर चले जाते हैं। लौटकर होमवर्क करते हैं, तब तक रात हो जाती है। खाना खाकर फिर पढ़ना और सोना। ऐसा लगता है कि बच्चों का बचपन उनके खेल, उनका शोरगुल, उनकी शैतानियां, गये जमाने की बातें हो गई हैं। करिअर बनाने की आपाधापी ने बच्चों से उनके खेल और खाली समय छीन लिया है। बच्चे बाहर कम खेलने जा पाते हैं। हाल ही में मार्केट रिसर्च फर्म, एडलान इंटेलीजेंस ने फरवरी और मार्च महीने में दस देशों में एक सर्वे किया था। ये देश थे – भारत, अमेरिका, ब्राजील, ब्रिटेन, तुर्की, पुर्तगाल, दक्षिण अफ्रीका, वियतनाम, चीन, और इंडोनेशिया। इस शोध में इन देशों के बारह हजार माता-पिता और अभिभावकों को शामिल किया गया था। इन सभी का कम से कम एक बच्चा पांच साल से लेकर बारह साल का था। माता-पिता और अभिभावकों ने माना कि उनके बचपन के मुकाबले उनके बच्चे बाहर कम खेल पाते हैं। दुनियाभर में आधे से अधिक बच्चे एक घंटे से भी कम बाहर खेलते हैं। भारत में छप्पन प्रतिशत माता-पिता और अभिभावकों ने भी यही कहा था कि उनके बच्चे कम खेल पाते हैं। मनोवैज्ञानिकों का भी कहना है कि बच्चों की ऊर्जा का सही इस्तेमाल करने के लिए उनका खेलना बहुत जरूरी है। उनकी ऊर्जा सही दिशा में लगनी चाहिए, वरना कई बार वे सही दिशा न मिल पाने के कारण हिंसक गतिविधियों में भी शामिल हो जाते हैं। मनोवैज्ञानिक, शिक्षक और डॉक्टरों का भी कहना है कि बच्चों को ज्यादा से ज्यादा खेलना चाहिए। मगर सवाल तो यही है कि कैसे बच्चों को लौटाकर खेल के मैदान में वापस लाया जाए। इन दिनों कम शारीरिक गतिविधि के कारण बच्चे बहुत-सी उन बीमारियों के शिकार हो चले हैं, जिन्हें लाइफ मैनेजमेंट डिजीज कहा जाता है। उनकी आंखें खराब होने लगी हैं, यहां तक कि वे अवसाद का शिकार भी हो रहे हैं। अगर जरा-सी भी फुर्सत हो तो वे बाहर खेलने जाने के मुकाबले अपना समय अपने मोबाइल और इंटरनेट पर बिताते हैं। इस कारण कई बार वे साइबर अपराधियों के चंगुल में भी फंस जाते हैं। यही नहीं, बच्चे मुसीबतों का सामना न कर पाने के कारण कई बार आत्महत्या जैसे भयानक कदम भी उठाते हैं। न जाने क्यों वे किसी से अपने मन की बातें भी नहीं कह पाते। बच्चों के पास समय का अभाव तो है ही, देखने में आता है कि स्कूलों और घरों में भी खेलने की जगहें कम हुई हैं। एक वजह भारत में बहुमंजिली इमारतों में रहने और इन इमारतों में खेलने की जगहों का कम हो जाना है। यही नहीं स्कूल भी सिकुड़ते जा रहे हैं। वे भी बहुमंजिले हैं और उनमें भी खेल के मैदान छोटे होते जा रहे हैं। कई बार तो मामूली छोटे-छोटे घरों में स्कूल खोल लिए जाते हैं। आमतौर पर पढ़ाई एक बड़े बोझ की तरह बच्चों के कंधों पर बस्तों की तरह लदी रहती है। कई माता-पिता गर्व से बताते हैं कि उनका बच्चा तो सातवीं से ही आई ए एस या आई आई एम अथवा आईआईटी की तैयारी कर रहा है। दरअसल, वे बच्चों पर अपने सपनों को लाद देते हैं। जो वे नहीं कर सके या जहां वे सफल नहीं हुए, वे उस क्षेत्र में अपने बच्चों को सफल होते देखना चाहते हैं। वे शायद ही कभी बच्चों से कहते हैं कि वे बाहर जाकर खेलें। अब अगर हालिया शोध में अभिभावक इस बात से चिंतित हैं कि उनके बच्चे बाहर नहीं खेलते हैं तो यह एक शुभ समाचार है। बच्चे खेलेंगे-कूदेंगे, अपने हमउम्र बच्चों से मेल-मिलाप करेंगे, तभी वे स्वस्थ रह सकेंगे। स्वस्थ रहेंगे तो ही पढ़ाई में भी मन लगेगा।

स्कूल में भी अच्छा प्रदर्शन कर पाएंगे। स्कूलों को भी सोचना होगा कि कैसे वे अपने बच्चों को अधिक से अधिक खेलने के लिए उत्साहित कर सकें। आमतौर पर स्कूलों में खेल के नाम पर इक्का-दुक्का अध्यापक होते हैं। जरूरी नहीं कि एक क्रिकेट खिलाने वाला अध्यापक बैडमिंटन और टेबल टेनिस भी अच्छा खेल सके।

इसलिए, जितना जरूरी स्कूलों और घरों के आसपास बच्चों के लिए खेल के मैदान और बच्चों का बाहर खेलना जरूरी है, उतना ही जरूरी है कि स्कूलों में बस एक खेल के अध्यापक-अध्यापिका से ही काम न चला लिया जाए। उनकी संख्या बढ़नी चाहिए क्योंकि बच्चे हजारों और उन्हें खिलाने के लिए अध्यापक सिर्फ एक या दो। खेल की इतनी उपेक्षा घातक हो सकती है। अब अगर बच्चों को हमेशा पढ़ाई में ही जुटे रहने की वकालत करने वाले माता-पिता और अभिभावक चाहते हैं कि उनके बच्चे खेलें भी तो स्कूलों को भी इस तरफ ध्यान देना चाहिए।

बाल विवाह पर हथौड़ा

सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए कहा है कि 18 साल से कम उम्र की पत्नी के साथ यौन संबंध बनाना रेप समझा जाएगा। कोर्ट के अनुसार नाबालिग पत्नी इस घटना के एक साल के अंदर शिकायत दर्ज कर सकती है। निश्चय ही यह फैसला स्त्री सशक्तीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम है। इससे समाज में एक व्यापक बदलाव की शुरुआत हो रही है। सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला ऐसे समय में आया है, जब वहां विवाह संबंध के अंतर्गत पत्नी की मर्जी के बगैर बनाए गए यौन संबंध को अपराध घोषित करने की मांग करने वाली याचिका पर सुनवाई हो रही है और समाज में सहमति की उम्र को लेकर बहस छिड़ी हुई है। अदालत ने फिलहाल यह साफ किया है कि इस फैसले में विवाह के भीतर बलात्कार के मुद्दे पर कुछ नहीं कहा गया है। सुप्रीम कोर्ट की दो सदस्यों वाली बेंच ने फैसला सुनाते हुए कहा कि बलात्कार संबंधी कानून में मौजूद अपवाद अन्य कानूनों के सिद्धांतों के प्रति विरोधाभासी हैं और यह बालिका के अपने शरीर पर संपूर्ण अधिकार और उसके स्व-निर्णय के अधिकार का उल्लंघन है। कोर्ट ने केंद्र और राज्यों की सरकारों से कहा है कि वे बाल विवाह रोकने की दिशा में सक्रिय कदम उठाएं। गौरतलब है कि आईपीसी की धारा 375 सेक्शन-2 में रेप को परिभाषित किया गया है। इसमें 15 से 18 साल की पत्नी के साथ यौन संबंध को रेप की परिभाषा से बाहर रखा गया था जिसका खमियाजा कम उम्र में विवाहित होने वाली लड़कियों को भुगतना पड़ता था। भारत की शर्मनाक शिशु मृत्यु दर के पीछे भी यह एक बड़ा कारण है। इस फैसले का सीधा प्रभाव यह होगा कि मुकदमे और सजा के डर से लोग बच्चियों को अपनी बहू बनाने में हिचकेंगे। देश के कई इलाकों में आज भी बाल विवाह प्रचलित है, खासकर लड़कियों की शादी कम उम्र में ही कर दी जाती है। 2016 के नैशनल फैमिली हेल्थ सर्वे के मुताबिक देश में तकरीबन 27 फीसदी लड़कियों की शादी 18 साल की उम्र के पहले हो जाती है। 2005 के नैशनल फैमिली हेल्थ सर्वे में यह आंकड़ा तकरीबन 47 फीसदी था। यानी सिर्फ दस वर्षों में 18 साल से कम उम्र वाली लड़कियों की शादी में 20 फीसदी की गिरावट आई है। कानून के डर से यह प्रक्रिया अब और तेज होगी। अगर कोई कम उम्र में लड़की की शादी कराना भी चाहेगा तो सरकारी एजेंसियों और गैर सरकारी संगठनों के लिए उसके खिलाफ कार्रवाई करना आसान होगा। अभी तक पर्याप्त कानून न होने की वजह से बाल विवाह रोकने के प्रयास कमजोर पड़ जाते थे। सुप्रीम कोर्ट का निर्देश मानते हुए राज्य सरकारों को अब बाल विवाह रोकने के लिए कठोर कदम उठाने चाहिए।

केरल : हिंसा के बरक्स

केरल में कथित 'लाल-जेहादी आतंक' का मुकाबला करने के नाम पर भाजपा अध्यक्ष अमित शाह द्वारा छेड़ी गई 'जन सुरक्षा यात्रा' इसी का एक और सबूत है. इस बहुप्रचारित यात्रा में उन्होंने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है. चार-चार राज्यों के भाजपायी मुख्यमंत्रियों और आधे दर्जन से ज्यादा केंद्रीय मंत्रियों को इस मुहिम में केरल में उतारा जाना, इसी की ओर इशारा करता है. दूसरी ओर, इस मुहिम को देश भर में फैलाने की कोशिश में भाजपा अध्यक्ष ने अपने कार्यकर्ताओं को सभी राज्यों की राजधानियों में सीपीएम कार्यालयों पर प्रदर्शन करने का और राजधानी दिल्ली में सीपीएम केंद्रीय कार्यालय पर इस यात्रा के दौरान दस दिन लगातार प्रदर्शन करने का अभूतपूर्व निर्देश दिया है. आरएसएस-भाजपा इस मुहिम के जरिए पूरे देश को समझाने की कोशिशों में लगे हुए हैं कि उनके कार्यकर्ता केरल और वामपंथ की महत्त्वपूर्ण उपस्थिति वाली दूसरी जगहों पर भी लगातार कम्युनिस्टों की 'लाल हिंसा' के शिकार हो रहे हैं, कि वामपंथी प्रभाव वाले इलाकों में उनके प्रभाव का विस्तार रोकने के लिए उनके खिलाफ व्यवस्थित रूप से हिंसा का प्रयोग किया जा रहा है. बेशक, यह प्रचार कोई नया नहीं है. फिर भी केरल के पिछले विधान सभा चुनाव में एलडीएफ की जीत के बाद से इस अभियान को बहुत तेज कर दिया गया है. इसी क्रम में वह कई बार अल्पसंख्यक समूहों और जमीनी स्तर पर उनके पक्ष में खड़े होने वाले कम्युनिस्टों, जो राजनीतिक विचार धारात्मक रूप से उसके सबसे कट्टरविरोधी हैं, से हिंसक झड़पों में भी शामिल रहा है. बहरहाल, 2014 के आम चुनाव में देश भर में अपनी सफलता के बाद भी भाजपा केरल में अपना खाता न खोल पाने के बावजूद अपने मत फीसद में ध्यान देने लायक बढ़ोतरी करने में और पहली बार एक अंक की देहली लांघने में कामयाब रही थी.

वैश्विकी : आजादी की मांग का वैश्विक आयाम

पिछले दिनों स्पेन से कैटालोनिया की आजादी की आवाज विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाओं में क्षेत्रीय स्तर पर असमान विकास के विरुद्ध उठी आवाज है. स्पेन का यह उत्तर-पूर्वी इलाका सामाजिक-आर्थिक विकास की दृष्टि से देश के दूसरे क्षेत्रों की तुलना में काफी समृद्ध है. इस इलाके की अपनी भाषा-संस्कृति है, जो देश के अन्य इलाके से उसकी अलग पहचान कायम करती है. आजादी के समर्थक कैटालोनिया इलाके के निवासियों का तर्क है कि उनके विकास के अर्जित लाभ में वे लोग हिस्सा मांग रहे हैं, जिनका इस विकास में कोई योगदान नहीं है. इसका मतलब है कि एक देश के भीतर ही एक क्षेत्र दूसरे क्षेत्रों के साथ अपनी समृद्धि का बंटवारा करना नहीं चाह रहा है. पिछले रविवार को पृथक कैटालोनिया राष्ट्र के मुद्दे पर हुई रायशुमारी और उसके बाद की घटनाओं ने स्पेन में एक संवैधानिक संकट पैदा कर दिया है. लिहाजा, सरकार को इस रायशुमारी को गैर-कानूनी घोषित करना पड़ा है. इन दिनों यूरोप और अमेरिका में एक नये तरह का क्षेत्रवाद उभर रहा है.

यह विचार एकता से बिखराव की ओर ले जाने का समर्थन करता है. यूरोपीय संघ से इंग्लैंड का बाहर आना इसका बेहतर उदाहरण है. इंग्लैंड को भी यह महसूस हुआ कि हमारे विकास का लाभ दूसरे देश उठा रहे हैं, जिसके कारण हमारी अर्थव्यवस्था पिछड़ती जा रही है.

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की 'अमेरिका फर्स्ट' की नीति को भी इससे अलग करके नहीं देखा जा सकता. यह नई सोच व नया विचार है, जो अमेरिका की उदारता को खारिज करता है. वह अपनी समृद्धि में किसी गरीब और पिछड़े देश को हिस्सेदार बनाना नहीं चाहता.

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं

1. अभिमान, घमंड, अनुमान 4. बादल, मेघ, जलद (सं) 6. अधिकार वाला, अधिकारी 8. गति, सामंजस्य, समा जाना 10. कारावास, जेल 11. जोर, शक्ति, जान, सांस 12. राजाओं के रहने का भवन 15. मालामाल, अमीर, धनवान 18. नाव खेने का यंत्र 20. 'खन' ध्वनि उत्पन्न होना, पायल आदि का शब्द करना 21. मार डाला हुआ, घायल किया हुआ 22. हमेशा, आवाज 23. आग की लपट, ज्वाला 24. झगड़ा, तकरार 25. हीरा।

ऊपर से नीचे

1. दोषी, अपराधी 3. ताश में नौ अंक वाला पत्ता 4. झंडा, पताका 5. गहरा कीचड़, पंक 7. बूंद, अंश 9. मृत्यु के देवता 13. संसार, दुनिया, जग 14. हुजूर, जनाब, सम्मान सूचक एक शब्द (उ.) 16. सच्चा, धर्मनिष्ठ, ईमानवाला 17. अनूठा, बांका, अनुपम, छैला 18. आश्रय, शरण 19. साधुवाद, प्रशंसा 20. पटवारी की ऐसी बही जिसमें खेत संबंधी अनेक बातें लिखी जाती है, एक प्रकार का दानेदार संक्रामक रोग 23. गम, मातम, दुख।

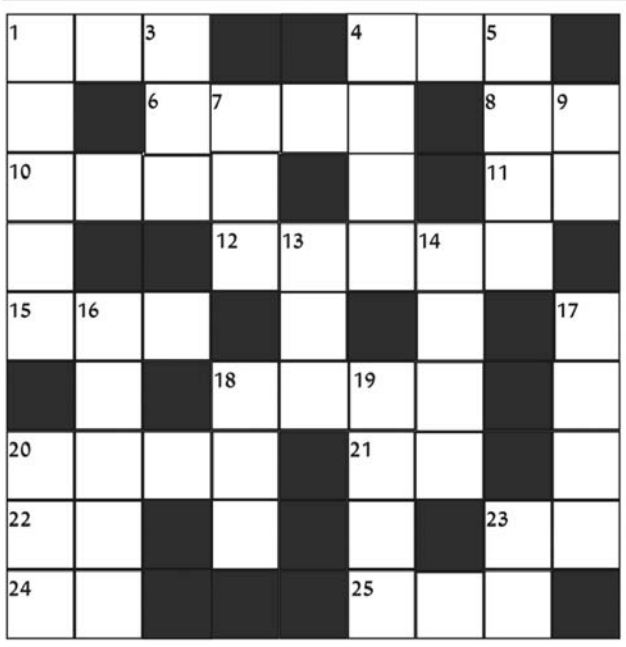

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 04 का हल

स्मृ	ति	■	पा	व	क	■	बे	ल
■	र	ज	नी	च	र	■	■	ट्टू
मु	स्का	न	■	न	म	की	न	■
सा	र	■	स	■	■	ट	ख	ना
फि	■	अ	जा	य	ब	■	रा	जा
र	च	ना	■	था	ल	■	■	य
■	■	धि	■	र्थ	■	स	मा	ज
उ	प	कृ	त	■	आ	वा	ज	■
ल्लू	■	त	■	■	ब	ल	रा	म

सू-दोकू

	8				1		5	
6			8			2		3
	3				2		1	
		3		9		5		4
5			3				9	
		4		2				6
4			2		3		6	
		6				8		7
	2	9	7		6			

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.04 का हल

5	3	9	7	4	8	6	2	1
2	1	6	5	9	3	4	7	6
4	7	8	1	6	2	3	5	9
3	6	1	8	5	9	2	4	7
8	5	2	3	7	4	1	9	6
7	9	4	2	1	6	8	3	5
6	4	7	9	2	1	5	6	3
1	8	5	4	3	7	9	6	2
9	2	3	6	8	5	7	1	4

राशिफल

मेष- आज जमीन-जायदाद से संबंधित क्षेत्रों में उत्तम लाभ मिलेगा। आपको अपने पिता के आशीर्वाद से शासन द्वारा सम्मानित किए जाने की संभावना रहेगी।

वृष- आज आप निर्भयता से अपने कार्यों को संपन्न कराने में सक्षम रहेंगे। जीवनसाथी के साथ आज बहुत मधुर संबंध रहेंगे।

मिथुन- अगर आपका धन कहीं अटका हुआ है तो आज आपको आसानी से मिल सकता है। बुद्धि विवेक से लिए गए निर्णय लाभप्रद रहेंगे।

कर्क- मेहनत से किए गए कार्यों में आज आपको सफलता मिलेगी। भौतिक सुख साधनों पर खर्चा अधिक होगा।

सिंह- आत्मविश्वास के बल पर किए गए प्रयासों में सफलता मिलेगी। पुराने रुके हुए कार्य थोड़ा खर्च करने से बन सकते हैं। नई योजनाओं पर आज काम शुरू हो जाएगा।

कन्या- भाग्य की दृष्टि से आज का दिन अच्छा रहेगा। वाणी पर संयम रखें,आप अपनी कार्यकुशलता से सर्वत्र विजय, विभूति, सफलता प्राप्त करेंगे।

तुला- आप अपनी बातों को सत्य साबित करने में सफल रहेंगे। माता-पिता, गुरु के प्रति निष्ठा, भक्तिभाव प्रतिष्ठा वृद्धि में सहायक होगा। सायंकाल चोरी का भय है। सावधान रहें।

वृश्चिक- ज्यादा खर्च की स्थिति रहेगी। संतान के द्वारा किए गए श्रेष्ठ कार्यों से आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। धैर्य तथा प्रतिभा से शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

धनु- विद्या बुद्धि ज्ञान की वृद्धि होगी। आपके कठिन प्रयासों से इच्छा की पूर्ति होगी। शासन द्वारा आपको सम्मानित किए जाने की प्रबल संभावना है।

मकर- आज आपको पूर्वजों से धन मिलने की संभावना है। अतः आपके संचित द्रव्य तंत्र-मंत्र साधना में भी आपकी रूचि बढ़ सकती है।

कुंभ- आमदनी की बढ़ोतरी के लिए किए गए प्रयास शत-प्रतिशत सफल रहेंगे। भाग्य की दृष्टि से आज का दिन अच्छा रहेगा।

मीन- आज आपकी अपनी संपत्ति में वृद्धि होगी। नौकरी में गुप्त शत्रु चुगली करेंगे, जिससे सायंकाल के समय परेशानी हो सकती है।